आत्मा के सौंदर्य का शब्द रूप है काव्य
मानव होना भाग्य है कवि होना सौभाग्य - नीरज

- तेरी याद के बिना सबेरा ही नही होता मेरा,
  देख तेरी कितनी आदत सी हो गई है मुझे..!!

- बारिश पूछती है
  उन खोये हुए पलों के बारे में
  जब कागज़ की कश्तियाँ बनाकर हम
  दुनियां से बेखबर हो जाते थे

- हम दोनों जानते हैं प्रेम कैसे संजोना है
  एक को माली एक को पेड़ होना है।

- गुनाह करके कहाँ जायोगे ग़ालिब
  ये ज़मीं ये आसमां सब उसी का है ---मिर्ज़ा ग़ालिब

- जैसे जैसे लिखने का हुनर निखरता गया,
  झूट संवरता गया, सच बिखरता गया..!!!

- इक रोज़ यहां से चले जाने के बाद,
  मैं छोड़के जाना चाहता हूं
  अनगिनत कविताएँ ,बेइन्तेहाँ इश्क
  और तुम्हारे नाम लिखा इक ख़त...

- जब थक जायो दुनिया की महफिलों से तुम
  आवाज देना हम अक्सर अकेले ही रहते हैं

- जो तुम हो, वही रहो
  इस संसार में मौलिकता ही
  पूजनीय है -----

- मत छोड़ उसको उसके हाल पर
  क्या पता उसके पास तेरे सिवा कोई न हो

- उसके साथ रिश्ता मेरा
  किराये के घर जैसा रहा
  मैंने सजाया तो बहुत
  लेकिन वो कभी मेरा न हुआ

- प्रेम को पाने के लिए उतना ही समर्पण चाहिए
  जितना हम भगवान को पाने के लिए करते है,
  क्योंकि प्रेम को हम नही प्रेम हमको चुनता हैं..!

- महक उठता है मौसम
  तुम्हारे ख़्याल से

- *तमाम डाकखाने प्रेम से*
  चलते रहे... और कचहरी
  नफरत से..हैरत है कि
  डाकखाने कम होते गए और
  कचहरियां बढ़ती चली जा रहीं...

- कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की
  जो है आज थमा थमा सा चल निकलेगा

- **जीतने वाला ही नहीं**
  बल्कि कहाँ पर हारना है
  ये जानने वाला भी महान होता है

- मेरी और उसकी आरज़ू मैं बस फर्क इतना है ,
  मुझे बस वो और उसे सारा ज़माना चाहिए

- जो देखने में बहुत ही क़रीब लगता है
  उसी के बारे में सोचो तो फ़ासला निकले

- लफ़्ज़ों के इत्तेफ़ाक़ में, यूँ बदलाव करके देख,
  तू देख कर न मुस्कुरा, बस मुस्कुरा के देख..

- इन उम्र से लम्बी सड़कों को, मन्ज़िल पे पहुँचते देखा नहीं
  बस दौड़ती फिरती रहती हैं, हम ने तो ठहरते देखा नहीं
  गुलज़ार साब

- हमें हर वक़्त ये अहसास दामन गीर रहता है
  पड़े हैं ढेर सारे काम और मोहलत ज़रा सी है

- नहीं बांध पाती हूं मैं
  तुम्हारे प्रेम को शब्दों में
  जब भी मैं प्रयत्न करती हूं
  तुम्हारे प्रेम को लिखने की
  हर अक्षर तुम्हारे प्रेम के समक्ष
  बौने प्रतीत होते है
  तुम होते हो मेरे समीप जब
  मैं झांकती हूं तुम्हारी आंखों में
  टटोलती हूं जब तुम्हारे हृदय को
  तुम्हारे प्रेम का तेज ऐसे बिखरता है
  जैसे, समस्त ब्रह्मांड में
  तुम्हारे प्रेम से सुंदर कुछ भी नहीं
  मेरे अक्षर उसमें कहीं विलीन हो जाते हैं
  रह जाती है स्तब्ध मेरी तूलिका और
  झंकृत होने लगती है एक
  प्रणय संगीत हृदय में और हर क्षण
  बंध जाती हूं मैं तुम्हारे प्रेम में, किंतु
  नहीं बांध पाती हूं मैं
  तुम्हारे प्रेम को शब्दों में

ऐसा नहीं है कि पुनः प्रेम नहीं हो सकता,
ऐसा भी नहीं कि कोई प्रेम करने वाला
नहीं मिलेगा, ऐसा भी नहीं कि कोई
तुमसा ना मिलेगा,
सब हो सकता है पुनः परंतु..
हृदय अटका पड़ा है तुममें
जिसे कोई और चाहिए ही नहीं,
जिसे तुमसे अच्छा कोई दिखता नहीं,
खैर.!
ये बात अलग है कि प्राप्त तो मुझे तुम भी नहीं..!!

अक्सर मन के अहाते में टहलते हुए देखता हूँ मैं उसे
एक नज़्म है मुझमें
जो सोती नहीं रात भर
रात की स्याही को धुलती रहती है
अपने लफ़्ज़ों की चांदनी से
कभी ख़ामोशियों को बुलाकर करती है बातें
तो कभी मन की खिड़की से तकती रहती है आसमान
,
कभी किसी रात जब मैं जग जाता हूँ, ,
उसकी शरारतों से
तो पास बुलाता हूँ उसे
और कलम की थपकियां दे कर
उजले कागज के बिछौने पर फिर सुलाता हूँ उसे।
,

-हेमन्त परिहार

बहुत हद पार की थी हमने भी किसी के लिए
फिर उसने ही सिखा दिया मुझे हद में रहना

रोमांटिक होना छिछोरा होना नहीं होता,
इंसान वही रोमांटिक हो सकता है,
जिसमें एहसास को समझने की कूव्वत हो,
जिसमें जज़्बात हों, आरजुएँ हों, भावनाएं हों,
जिसमें जिंदादिली हो, जो प्रेम को जीना जानता हो,
जो देना जानता हो, जो बेइंतहा एहसासों से भरा हो, जिसमें आकाश जैसी
विशालता हो, जिसमें फूलों की कोमलता ही नहीं उनकी सुगन्ध भी हो,
जिसका वजूद बहुत नन्हीं नन्हीं चीजों से जुड़ा हो,
जो शुक्र करना जानता हो, जो अलसाई हवा को भी
तेज और सुवासित करना जानता हो,
जो सूखे गुलाबों को भी महक से सराबोर करना
जानता हो, जो मुस्कुराहटों में छिपे दर्द पहचान ले,
जो फीके रंगों में चमक भर दे,
जो भीड़ में भी हमें पहचान ले..!!

तामीर खुद को करने लगा हूँ आजकल
अख़बार कल जो आएंगे उनकी ख़बर हूँ मैं

तवील है मुसाफत मगर मंज़िल का यक़ीन है
आज़माइश कठिन है मगर वो भी तो रहीम है

- जिस्म से होने वाली मोहब्बत का इज़हार आसान
  होता है
  रूह से हुई मोहब्बत को समझाने में ज़िन्दगी गुजर
  जाती है

- आप से बिछड़े तो खुद को और बेहतर कर लिया
  आँख दरिया कर न पाए दिल को पत्थर कर लिया

- हो पाँव कट गए हैं तो क्या, कुछ भी नहीं गम
  काँधे हैं दोस्ती के मयससर कदम कदम

- सब से कठिन काम है सब को खुश रखना,
  उस से भी कठिन काम है सब से खुश रहना।

- बिगड़ैल हैं
  ये यादें .....
  देर रात को
  टहलने निकलती हैं

हवाएँ माफ़ी माँग लें फिर भी क्या
टूटी हुई टहनी टूटी ही रह जाती है

सासों की जो ये दौलत है
बस उसी की बदौलत है

छोड़ रहे हो अच्छा है
तुम तो ये भी कर सकते हो
मैं तो जिससे मिल जाता हूँ।
साथ निभाने लगता हूँ

गुरूर है हमें अपने ही किरदार पर
कोई तुमसा नहीं तो कोई हमसा भी कहाँ है

मुझको जब जब रोने की नहीं मिली कोई ख़ास वजह
मैंने तब तब सब से बोला आँख में कुछ चला ग्यारह

सहारा हो न हो मैं नाव ले जाऊँगा साहिल तक
हुनर मल्लाह में होता है चप्पू में नहीं होता

किसी की बात में आकर जो आना हो तो मत आना
अगर जाने का पहले से बहाना हो तो मत आना...रेणु नय्यर

अच्छा लगता है तेरा नाम मेरे नाम के साथ
जैसे कोई खूबसूरत सुबह जुड़ी हो
किसी हसीन शाम के साथ

कुछ तूने कहा,, कुछ मैंने सुना,, भूल गया।
तेरा कहा अन कहा सा ,,,,
मेरा सुना अन सुना सा।।

हम तेरे साथ तेरे जैसा रवय्या रखते
देने वाले ने मगर ऐसी तबियत नहीं दी

मुझसे जो तंग हुआ मैंने उसे छोड़ दिया
उसको खुद छोड़ के जाने की भी ज़ेहमत नहीं दी!

लफ़्ज़ काफ़ी नहीं , न होंगे कभी
फिर से खामोशियों को पढ़ना है

- जिसके साथ सुकून बहुत मिलता है
  उसके साथ वक़्त बहुत कम मिलता है

- वक़्त को भी वक़्त की दरकार होती है
  भूलकर बातें फिर नई शुरुआत होती है
  वक़्त को भी वक़्त की दरकार होती है
  हक तुम्हें है सोग का तुम गम मनाओ
  ग़म बडा है वक़्त लो फिर मुसकुराओ
  मुस्कुराने से डगर आसान होती है
  वक़्त को भी वक़्त की दरकार होती है

- बारिशों के मौसम में ,
  तुझको याद करने की ,
  आदत पुरानी है !!!

  अब की बार सोचा ,
  आदत बदल डालें !!!

  आदत बदली मगर
  बारिश के साथ साथ
  याद बरसने लगी !!!

- जो बातें हम 'पी' जाते हैं
  वो बातें हमें 'खा' जाती हैं

घर
बाहर जाने के लिए उतना नहीं होता
जितना लौटने के लिए होता है

कोई कल कह कर गया
काश तुमने मुझे समझा होता।
कोई आज कहता है
काश तुम्हारी तरह किसी ने समझा होता।
ख्वाहिश है कि कोई ये भी कहे
काश मैंने तुम्हें समझा होता..!!

इक उम्र तक मैं उसकी ज़रूरत बना रहा
फिर यूँ हुआ कि उसकी ज़रूरत बदल गई

ये क्या कि सबसे बयाँ दिल की हालतें करनी
"फ़राज़" तुझ को न आई मुहब्बतें करनी !!!

कब कहाँ, यह नहीं
जब भी, जहां भी
हो जाये मिलना
केवल यह कि
जब भी मिलो
तब खिलना

अज्ञेय

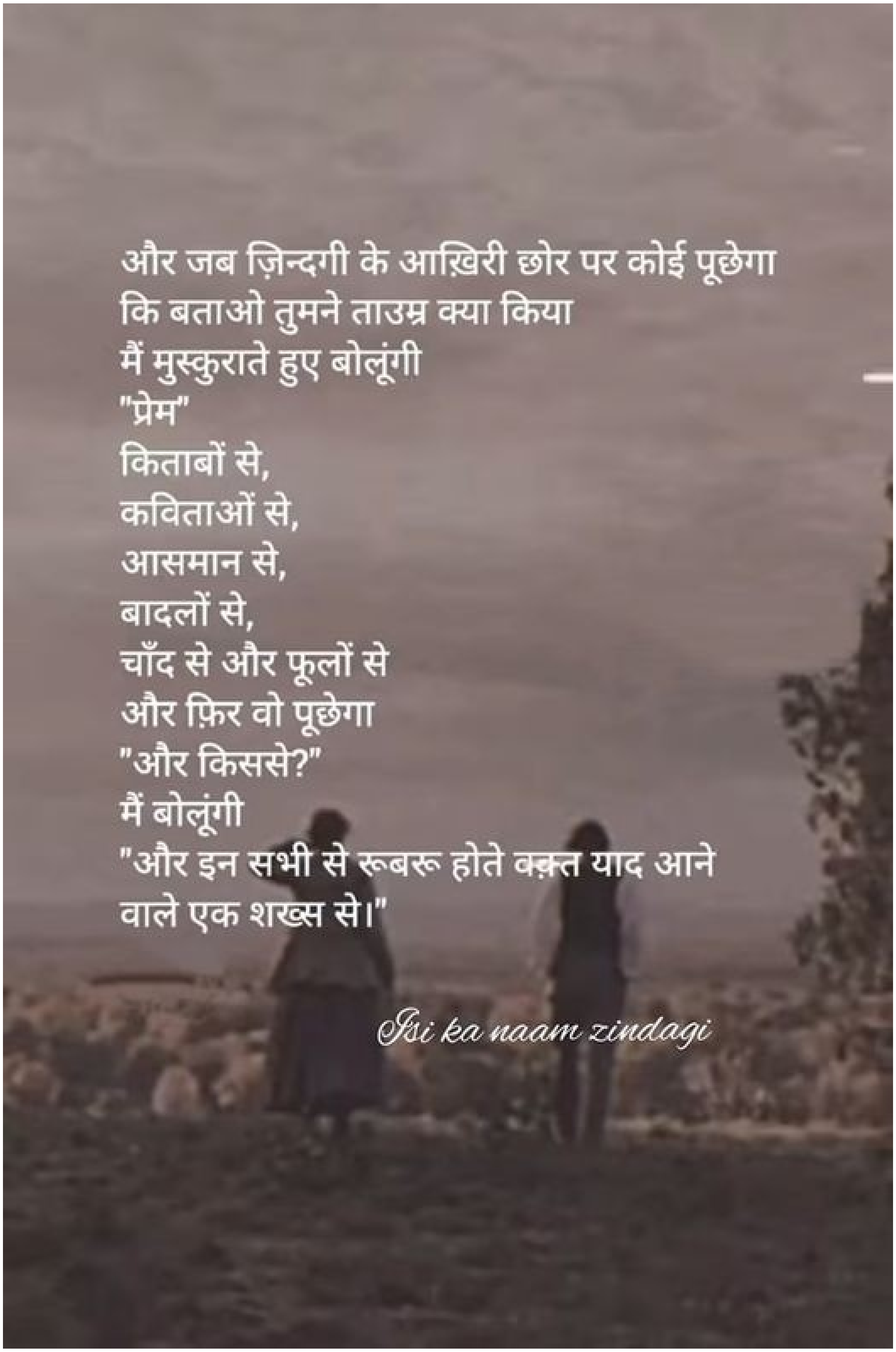
और जब ज़िन्दगी के आख़िरी छोर पर कोई पूछेगा
कि बताओ तुमने ताउम्र क्या किया
मैं मुस्कुराते हुए बोलूंगी
"प्रेम"
किताबों से,
कविताओं से,
आसमान से,
बादलों से,
चाँद से और फूलों से
और फ़िर वो पूछेगा
"और किससे?"
मैं बोलूंगी
"और इन सभी से रूबरू होते वक़्त याद आने
वाले एक शख्स से।"
Isi ka naam zindagi

इस अंक पर एक प्रेमी पाठक की प्रक्रिया

कहाँ पूरी होती है दिल की सारी ख्वाहिशें,
कि बारिश भी हो, यार भी हो और, पास भी हो...!!

इस बार का अंक एक बेहद ख़ूबसूरत भावाभिव्यक्ति और ज़िंदगी के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में अपने- अपने जीवन में हर किरदार की मुहब्बत के रूप में तुमने जीवंत कर दिया। जैसे पानी का कोई रंग नहीं फिर भी पानी तो पानी है इसी तरह मुहब्बत, इश्क़, प्रेम - प्यार व प्रणय.. ना जाने कितने नाम सम्बोधन फिर भी यह हर आदमी के भीतर रहता है कब कहाँ यह भाव जग जाय , उदय हो जाए यह तो वही जानता है.. " जिस तन लागे वही जाने.. रीत प्रीत की.. " इस बार का अंक आसमां की बुलंदियों पर मुहब्बत के गीत सुनाता है और हर हाल में जीना सिखाता है।तुम्हारी हर एक पंक्ति जीवन का सुंदर सुखद संदेश देती है- जैसे . बसंत का आना नहीं रोक सकते.. वाह ! इतनी ख़ूबसूरत , इतनी गहरी बात कही कि ज़िंदगी के मायने और समझ में आ जाएँ। तुम्हारी पंक्तियाँ मानों तो हर किसी शख़्स को राहत देने वाली.. जो जी लिया.. जो मिला वही मुकम्मल है.. अपने-अपने हिस्से में.. रवि एक ही भाव में पूर्ण प्रकृति के सृष्टि के भावों की अभिव्यक्ति बहुत सुंदर की है.." प्रेम ही प्रकृति के , सृष्टि के कण- कण में व्याप्त है.. यही असंख्य नामों से पुकारा जाता है।

और एक साहित्यिक समीक्षक ने लिखा

ढाई आखर प्रेम के -
40 वां संस्करण
कुल पृष्ठ 16 - बारिश से शुरूआत
दोस्तों के मन तक पहुंचने का प्रयास।
श्री रवि कामरा,
मुख पृष्ठ पर आजादी, सावन, प्रसन्ना का मुखर व्यक्तित्व।
कवि ,कविता , साहित्य और शब्द सृजन के कर्म और मर्म की समझ
कला -संगीत - अभिनय साधना के पारखी।
तन- मन- वाणी- व्यवहार -
नजर और नजरिए से सुसंस्कृत सेवा भावी इन्सान।
एक से बढ़ कर एक काव्य कलावंतो की कुसम कलियों का गुलदस्ता-
जिसमें शुमार हैं
अदम,शहरयार, अतुल अजनबी,मीर,जान एलिया, अशोक वाजपेयी,हेमंत परिहार और अंत में जयशंकर प्रसाद की पंक्तियां
वह पथ क्या
पथिक कुशलता क्या
जिस पथ पर
बिखरे शूल न हों
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या
जब धाराएं प्रतिकूल न हों
और अंत में संदेश
खुशियां बांटिए
खुशियां मिलेंगी
🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹

लक्ष्मण बोलिया.

हम एक दशक से हर वर्ष सदाबहार देव आनन्द साब का जन्मदिन मनाते हैं. इस वर्ष भी 26 सितम्बर को 101वां जन्मदिन जवाहर कला केंद्र जयपुर में मनाया जायेगा . आपको यू ट्यूब पर लाइव का लिंक मिल जायेगा आनन्द लीजियेगा हमारे जुनूंन का

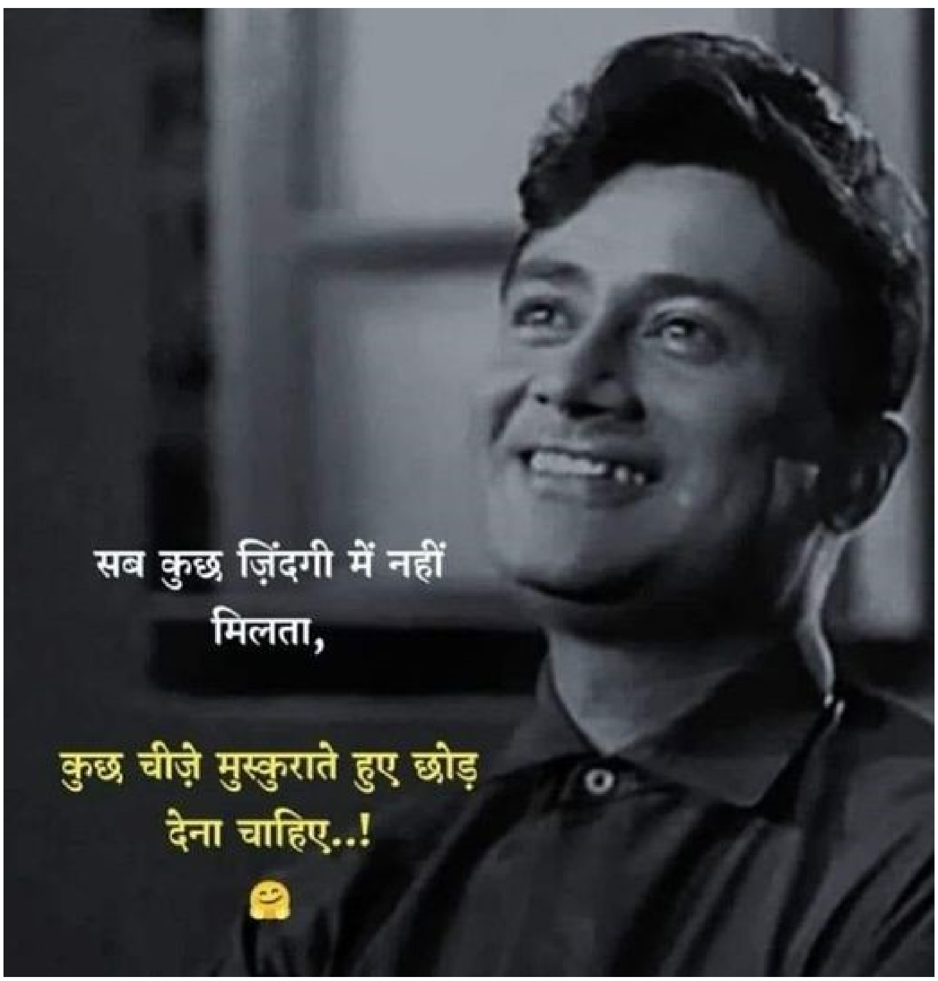

जिंदगी का साथ निभाना ही लक्ष्य हो सदा

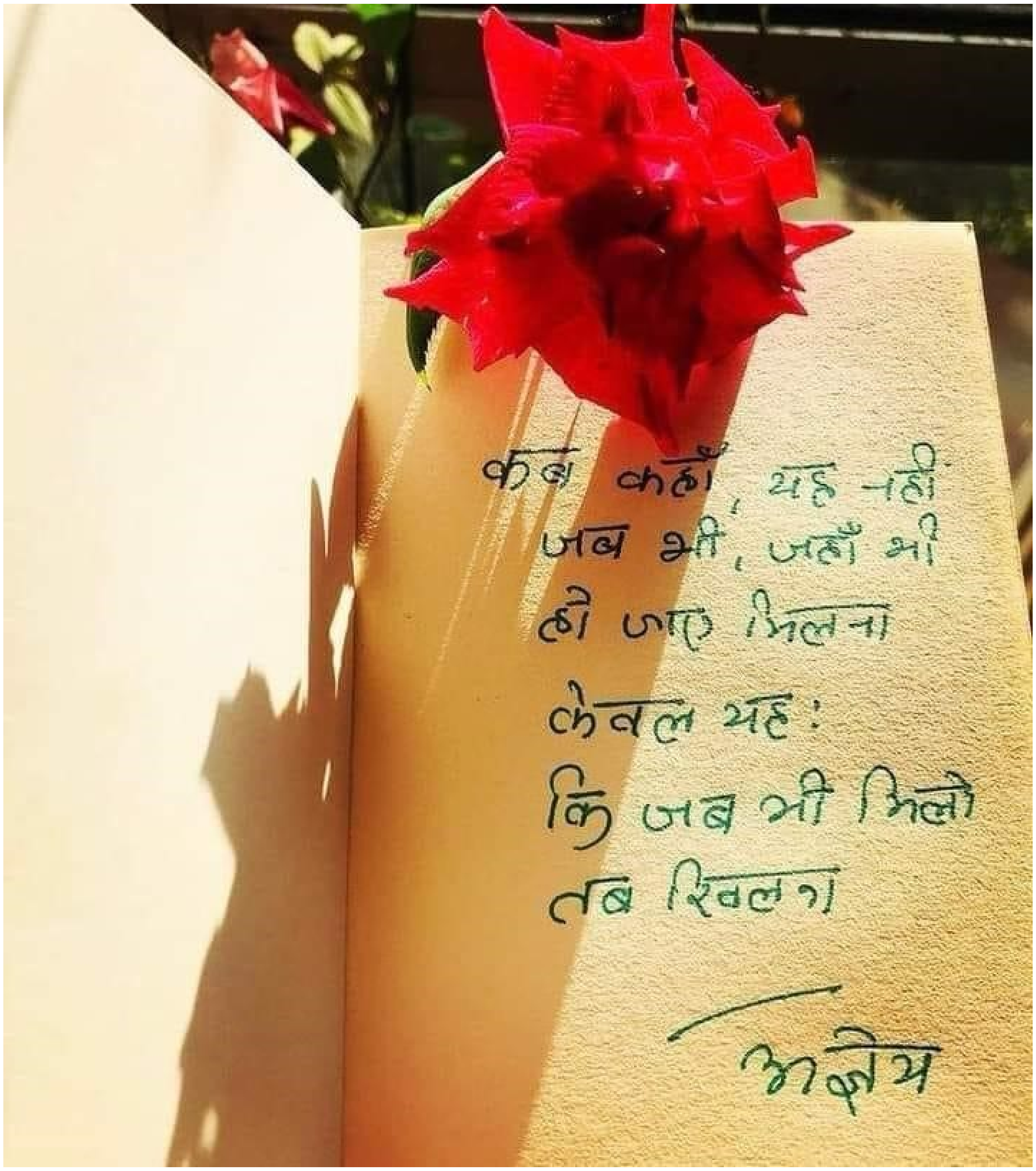

रवि कामरा
जयपुर
9214442233